

अध्याय-7

हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान शिमला

हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान – एक सरसरी दृष्टि में

हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला, हिमाचल प्रदेश और जम्मू तथा कश्मीर के पश्चिमी हिमालयन राज्यों की विशेष वानिकी अनुसंधान समस्याओं का समाधान करता है। इस संस्थान के अनुसंधान के प्रमुख क्षेत्रों में शामिल हैं, शीतोष्ण वनों का पुनर्जनन, शीत रेगिस्तानों का पारि-पुनरुद्धार और निम्नीकृत क्षेत्रों का सुधार, एकीकृत नाशीजीव प्रबंध और रोपण स्टॉक सुधार द्वारा उत्पादकता बढ़ाने के साथ कृषि वानिकी का विकास करना और इसे लोकप्रिय बनाना। संस्थान पूर्व में शंकुवृक्ष अनुसंधान केन्द्र के रूप में जाना जाता था, यह मुख्यतः स्पूस और सिल्वर फर प्रजातियों, जो पश्चिमी हिमालयों की सबसे आम शंकुवृक्ष प्रजाति हैं, के प्राकृतिक पुनर्जनन की असफलता के कारणों का पता लगाने के लिए मई, 1977 पुनर्गठन और भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद् बनने के साथ शंकुवृक्ष अनुसंधान केन्द्र को हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान के रूप में पुनरनामित किया गया।

वर्ष 2001-2002 के दौरान पूरी की गई परियोजनाएं

परियोजना 1 : शीत रेगिस्तान वनीकरण और चरागाह स्थापना (एच एफ आर आई-001/03 (ई बी सी-07)/डब्ल्यू बी/1995)।

उप-परियोजना (i) वृक्षों, झाड़ियों एवं घासों सहित रोपण के लिए उपयुक्त प्रजातियों का चयन और प्रभावी स्थापना तकनीकें विकसित करना (एच एफ आर आई-001-ए/03 (ई बी सी-01)/डब्ल्यू बी/1995) तकनीकी रिपोर्ट के लिए सम्पर्क करें, प्रधान अन्वेषक-डॉ. के.एस. कपूर।

उपलब्धियां : 12 विभिन्न कुलों से संबंधित शीत रेगिस्तान क्षेत्रों से कुल 640 पादप प्रजातियां एकत्र की गईं। तीन सौ पैतालिस प्रजातियों की विलक्षण प्रजातियों के रूप में

शीत रेगिस्तान क्षेत्रों में पारि-पुनरुद्धार के लिए महत्वपूर्ण देशज झाड़ी जप्रजातियों



पहचान की गई। औषधीय महत्व की सत्ताइस प्रजातियों को लाल सूचीबद्ध औषधीय पादपों के रूप में घोषित किया गया। शीत रेगिस्तान क्षेत्रों में वनीकरण और पारि-पुनरुद्धार के लिए रोजा वीबियाना के अलावा पांच प्रधान देशज झाड़ी प्रजातियों उदाहरण - कैपेरिस स्पिनोसा; रिबस प्रजाति; करेगाना प्रजाति; कोलूटीया प्रजाति और क्रेटीजस प्रजाति को सूचीबद्ध किया गया।

हिमाचल प्रदेश में जूनपरस मैक्रोपोड़ा के विभिन्न स्थल सहायक स्टैण्डों का पारिस्थितिकीय सर्वेक्षण पूरा किया गया।

क्वेर्कश आइलेक्स : पौधशाला तकनीकों के मानकीकरण के लिए क्वेर्कश आइलेक्स पर अध्ययन किए गए।

हिप्पोफी रेमनॉइडस : बीज बुआई के अनुकूलतम समय का पता लगाने हेतु एकत्रित बीजों के प्रदर्शन के मूल्यांकन के लिए पौधशाला परीक्षण तैयार किए गए। आठ विभिन्न स्रोतों/उद्गमस्थलों से टेबो एवं पिन वैली के बीजों ने सर्वोत्तम प्रदर्शन किया। शीतकालीन बुआई सर्वोत्तम सिद्ध हुई।

उप-परियोजना (ii) क्लोनीय काष्ठ प्रजातियों की स्थापना तकनीकें सुधारना

उपलब्धियां : टेबो अनुसंधान स्टेशन में पर्यावरण सुधारने के लिए पारि-पुनरुद्धार कार्यकलाप शुरू किए गए। आकार के मानकीकरण के लिए टेबो (लाहोल-स्पिती) में प्रयोग शुरू किए गए। अभिलिखित आंकड़ों की गणना ने दर्शाया कि 60 घन से.मी. आकार के गड्डों में रोपित करने पर 18 से.मी. की व्यास श्रेणी के स्थानीय पॉपलरों के समूह सर्वोत्तम परिणाम देते हैं। विभिन्न उद्गमस्थलों के प्रदर्शन के मूल्यांकन पर पौधशाला परीक्षण तैयार किए गए। प्रारम्भिक परिणामों ने दर्शाया कि पाप्युलस सिलिएटा के पिंडर उद्गमस्थल ने पौधशाला अवस्था के अन्तर्गत सर्वोत्तम क्षमता दिखाई।

परियोजना 2 : शंकुधारी और पृथुपणी वनों का पुनर्जनन(एच एफ आर आई-002/04 (एस एफ जी-01)/डब्ल्यू बी/1995)। तकनीकी रिपोर्ट के लिए सम्पर्क करें, प्रधान अन्वेषक - डॉ. के.एस. कपूर।

उप-परियोजना (i) : निम्नीकृत शंकुधारी वनों में पाप्युलस सिलिएटा के सूत्रपात के प्रभाव की जांच करना।

उपलब्धियां : पाप्युलस सिलिएटा के तहत मानसूनों के दौरान नारकंडा में सिल्वर फर और सोलांग नाला में सिल्वर फर एवं स्पूस दोनों के अन्तःरोपण किए गए। प्रारम्भिक प्रेक्षणों ने दर्शाया कि पारिस्थितिकी रूप से महत्वपूर्ण शंकुवृक्षों की वृद्धि और विकास पर छाया का कुछ सकारात्मक संबंध है।

उप-परियोजना (ii) : प्रवर्धन, पौधशाला और रोपण तकनीकों का सुधार एवं विकास करना (एच एफ आर आई-002-बी/04 (एस एफ जी-01)/डब्ल्यू बी/1995)। तकनीकी रिपोर्ट के लिए सम्पर्क करें प्रधान अन्वेषक- डॉ. संदीप शर्मा।

उपलब्धियां : **सिल्वर फर** : सांख्यिकीय विश्लेषण ने दर्शाया कि 15-20 से.मी. आकार के पौधों ने क्षेत्र रोपण में उच्चतम मर्त्यता प्रतिशत दिखाया। अतः क्षेत्र परीक्षण के लिए 20से.मी. से कम सिल्वर फर के पौधों को नहीं लगाया जाना चाहिए।

स्पूस : स्पूस के मामले में परिणामों ने दर्शाया कि 25 से.मी. ऊंचाई से कम के पौधे क्षेत्र रोपण के लिए उपयोग नहीं किए जाने चाहिए।

यह देखा गया कि अंडर-कटिंग एवं प्रकुंचन परीक्षण करने के लिए हल्के गठन की मृदा में उगाए

गए फर पौधों ने पौधशाला में हल्का प्रदर्शन किया। बहिःरोपण के उपरान्त फर एवं देवदार के जड़-ट्रेनर पादपों की प्रारम्भिक उत्तरजीविता के परिणाम काफी उत्साहजनक हैं। चिलगोजा पाइन पर होमोप्लास्टिक और हीट्रोप्लास्टिक कलम बांधने पर प्रयोग किए गए और चार विभिन्न प्रतिकृतियों एवं उपचारों के साथ चार प्रकार के ग्राफ्ट तैयार किए गए। परीक्षण को पोषित किया गया और ग्राफ्टों के प्रदर्शन नियमित रूप से अभिलिखित किए गए। शुरु-शुरु में होमोप्लास्टिक और हीट्रोप्लास्टिक ग्राफ्टों के निष्पादन उत्साहजनक नहीं थे, लेकिन बाद में जब छोटे चिहनों का उपयोग करके कलम बांधने की पुनरावृत्ति की गई तो सफलता दर 25 प्रतिशत तक बढ़ गयी। जिला किन्नौर के झुंगी क्षेत्र से एकत्रित बीज सर्वोत्तम निष्पादक अभिलिखित किए गए। अध्ययनों से पता चला कि टैक्सस बकाटा के बीजों का रासायनिक खरोचना और 15 से 30 हफ्तों तक विभिन्न अवधि के लिए 5 डिग्री सेन्टीग्रेड से 20 डिग्री सेन्टीग्रेड के तापमान पर बारी-बारी से बीजों का तापन करना बीज प्रसुप्ति को तोड़ने के लिए आवश्यक रूप से वांछित है। यह भी देखा गया कि बीज केवल भ्रूण प्रसुप्ति प्रदर्शित करते हैं।

परियोजना 3 : रोपण स्टॉक सुधार कार्यक्रम (एच एफ आर आई-004/05 (एस एफ जी-02)/डब्ल्यू बी/1995)। तकनीकी रिपोर्ट के लिए सम्पर्क करें, प्रधान अन्वेषक-श्री आर.आर. भालेक।

उप-परियोजना (i) : चीड़ पाइन के बीज उत्पादन क्षेत्रों की स्थापना।



चीड़ पाइन के बीज उत्पादन क्षेत्र की स्थाना

उपलब्धियां : हिमाचल प्रदेश में विभिन्न क्षेत्रों में चीड़-पाइन स्टैण्डों का सर्वेक्षण किया गया ताकि 50 हैक्टेयर में बीज उत्पादन क्षेत्र स्थापित करने के लिए अन्तिम चयन किया जा सके। 10.52 क्षेत्रफल में डी पी एफ कोपरा (हिमाचल प्रदेश) में छंटाई संक्रिया पूरी की गई। बड़कोट वन (सुकेत वन प्रभाग, मण्डी) के लिए 22 हैक्टेयर हेतु छंटाई करने की अनुमति प्राप्त की गई और छंटाई संक्रिया प्रगति पर है। डिबकन डी पी एफ (18.44 हैक्टेयर) के मामले में, छंटाई के लिए क्षेत्र वन निगम को सौंप दिया गया है। जम्मू व कश्मीर में गणना अध्ययन किया गया। छांटने और रोककर रखने वाले दोनों तरह के वृक्षों के लिए स्टैण्ड की गणना का काम पूरा किया गया और राज्य मे 15 हैक्टेयर क्षेत्र में चीड़ पाइन के बीज उत्पादन क्षेत्र की स्थापना के लिए राज्य वन विभाग को क्षेत्र की अंकन सूची सौंपी गई। प्रबन्ध योजना के निर्देशन के अनुसार बीज उत्पादन क्षेत्रों का पोषण किया जा रहा है।

उप-परियोजना (ii) : बीज उद्यानों की स्थापना (एच एफ आर आई-004-बी/05 (एस एफ जी-02/डब्ल्यू बी/1995)।

उपलब्धियां : शीशम के क्लोनीय बीज उद्यान लगाने के लिए स्थलों का चयन किया गया और हिमाचल प्रदेश में गोंडपुर (3 हैक्टेयर), बीर पलासी (1.5 हैक्टेयर) और जम्मू-कश्मीर में लालीयाल (3.5 हैक्टेयर) में कुल 8 हैक्टेयर क्षेत्र में रोपण करके प्रबन्धन किया। कुनिहार वन प्रभाग के शुन में चीड़ पाइन के 5 हैक्टेयर पौध बीजोद्यान स्थापित करने के लिए 33 कैंडिडेट धन वृक्षों की सन्ततियों का उपयोग किया गया। हिमाचल प्रदेश में कुध (2 हैक्टेयर) और बीर पलासी (5 हैक्टेयर) में कुल 7 हैक्टेयर क्षेत्रफल में शीशम के 25 धन वृक्षों की सन्ततियां स्थापित की गईं। क्लोनीय बीज उद्यान के प्रबन्धन पहलुओं पर हिमाचल प्रदेश और जम्मू कश्मीर के एस एफ पी के अधिकारियों को प्रशिक्षण दिया गया।

उप-परियोजना (iii) : कायिक गुणन उद्यान और आदर्शन वन पौधशाला की स्थापना (एच एफ आर आई-004-सी/05 (एस एफ जी-02)/डब्ल्यू बी/1995)। तकनीकी रिपोर्ट के लिए सम्पर्क करें प्रधान अन्वेषक- डॉ. संदीप शर्मा।



शीशम का कायिक गुणन उद्यान

उपलब्धियां : नालागढ़ वन प्रभाग, हिमाचल प्रदेश के बीर पलासी वन में दो हैक्टेयर में शीशम के कायिक गुणन उद्यान स्थापित किए गए। सिप्रंकलर प्रणाली की स्थापना सहित स्थल में सिंचाई की सुविधाओं के लिए व्यवस्थाएं की गईं। बारेगांव, शिमला में हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान परिसर के नजदीक अनुसंधान, प्रशिक्षण और प्रदर्शन उद्देश्यों के लिए आदर्श वन पौधशाला सफलतापूर्वक स्थापित करके चालू की गईं। पौधशाला में सभी तरह की आधुनिक सुविधाएं उपलब्ध हैं।

वर्ष 2001-2002 के दौरान जारी परियोजनाएं

परियोजना 1 : क्षेत्र की चयनित आशाजनक प्रजातियों पर स्व-पारिस्थितिकी अध्ययनों के साथ विभिन्न पारि-जलवायवीय क्षेत्रों में अपेक्षाकृत अविशुद्ध वनों की तुलना में निम्नीकृत वनों की पारिस्थितिकी पर तुलनात्मक अध्ययन। (एच एफ आर आई-010/01 (ई बी सी-04)/प्लान/2000)। प्रधान अन्वेषक- डॉ. आर.के. वर्मा।

स्थिति : अध्ययन क्षेत्र में एक निम्नीकृत स्थल की पहचान की गई। पारिस्थितिकीय सर्वेक्षण किया गया। इन दो वनों के तहत क्रमशः जस्टिसिया सिमप्लेक्स और एन्ड्रोपोगन प्रजातियां प्रधान बूटियां थीं। विविधता तालिका अभिलिखित की गई। एकत्रित मृदा नमूनों का विश्लेषण किया गया।

निम्नीकृत क्षेत्रों के आस-पास स्थानीय लोगों की आवश्यकताओं का मूल्यांकन करने के लिए सर्वेक्षण किया गया और ईंधन काष्ठ, चारा आदि से संबंधित इनकी आवश्यकता का मूल्यांकन किया। ग्रीविया आप्टिवा, बौहिनिया वेरिगाटा, रॉबिनिया स्यूडोएकेसिया, ऐकेशिया कैटेचू, ल्यूकेना ल्यूकोसीफेला जैसी महत्वपूर्ण प्रजातियों के लिए उपयुक्त सांख्यिकीय अभिकल्प अपनाकर ब्लाकों में प्रदर्शन रोपण किए गए। प्रारम्भिक वृद्धि आंकड़ा अभिलेखन किया गया।

परियोजना 2 : पहाड़ी बांसों (निरगाल्स) के संरक्षण स्तर का मूल्यांकन, विभिन्न पारि-जलवायवीय क्षेत्रों से जननदृव्य संग्रहण और जननदृव्य बैंक की स्थापना (एच एफ आर आई-011/02 (ई बी सी-05)/प्लान/2000)। प्रधान अन्वेषक- डॉ. के. एस. कपूर।

स्थिति : हिमाचल प्रदेश के शिमला जिले में पहाड़ी बांसों यथा- नीचली ऊंचाईयों में अरुन्डिनेरिया फाल्केट और उच्च ऊंचाईयों की प्रजाति ए. स्पीथिफ्लोरा का सर्वेक्षण किया गया। पारिस्थितिकीय सर्वेक्षण किए गए। अन्य वनस्पति के साथ इस पहाड़ी बांस के संबंध भी प्रलेखित किए गए। कुछ क्षेत्रों में गांव समुदायों का साक्षात्कार भी लिया गया और कृषि से संबंधित अपनी दैनिक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए बांस उत्पादन तैयार करने की दिशा में इनकी आवश्यकताओं का भी मूल्यांकन किया गया।

परियोजना 3 : हिमाचल प्रदेश के किन्नौर जिले की बास्पा घाटीमें प्रधान प्रजातियों के पादमी संयोजन एवं सम्बद्ध माइकोराइजा पर अध्ययन (एच एफ आर आई-018/02(ई बी सी-06)/प्लान/2000)। प्रधान अन्वेषक- डॉ. के. एस. कपूर।

स्थिति : बास्पा घाटी में पहचान किए गए स्थलों का आवर्ति सर्वेक्षण करके अभिलिखित किया। अनुवृद्धि में 220 वंश का प्रतिनिधित्व था, जिसमें आगे 85 आवृत बीजी कुलों का प्रतिनिधित्व था। संकटापन्न प्रजातियों के दुर्लभ संग्रहण भी अभिलिखित किए गए। माइकोराइजल वर्गीकरण का अध्ययन करने के लिए प्रभावी एवं आर्थिक रूप से महत्वपूर्ण प्रजातियों के संग्रहण के साथ मृदा नमूने भी एकत्र किए गए।

परियोजना 4 : चयनित औषधीय पादप प्रजातियों के बहुमात्र प्रवर्धन के लिए पौधशाला प्रौद्योगिकी का मानकीकरण (एच एफ आर आई-009/07 (एन डब्ल्यू एफ पी-01)/प्लान/2000)। प्रधान अन्वेषक- श्री आर.आर. भालेक।



वालेरियन जटामांसी का पौधशाला मानकीकरण

स्थिति : शीतोष्ण हिमालयों की औषधीय पादपों की 21 प्रजातियों के जननदृव्य एकत्र करके बुन्धार पौधशाला में पोषण किया गया। कुछ आर्थिक रूप से महत्वपूर्ण औषधीय पादप प्रजाति की कृषि तकनीकों के सुधार के लिए परीक्षण शुरू किए गए।

परियोजना 5 : महत्वपूर्ण वृक्ष प्रजातियों के बीजों के संग्रहण, इनके संचालन, भण्डारण, बीजों के परीक्षण और प्रमाणीकरण के लिए कार्य पद्धित का मानकीकरण (एच एफ आर आई-012/05 (एस एफ जी-04)/प्लान/2000)। प्रधान अन्वेषक - श्री आर.आर. भालेक।

स्थिति : विभिन्न शीत रेगिस्तान प्रजाति के बीज एकत्र करके प्रयोगशाला में परीक्षण किया जा रहा है। रिबस ऑरिएण्टेल के बीजों को एक मिनट के लिए H_2SO_4 से उपचारित करने के फलस्वरूप नियंत्रण में 33.33% की तुलना में 58% का अधिकतम अंकुरण हुआ। हिप्पोफी तिबीताना के मामले में, परिणामों ने दर्शाया कि बुआई पूर्व उपचार की आवश्यकता नहीं है क्योंकि नियंत्रण ने प्रयोगशाला में 95% अंकुरण दर्शाया।

परियोजना 6 : विभिन्न पारि-जलवायवीय क्षेत्रों में विभिन्न स्थानीय रूप से उपलब्ध कच्चे पदार्थों से कम्पोस्ट तैयार करने के लिए सक्षम विधियों का विकास करना (एच एफ आर आई-015/05 (एच एफ जी-05)/प्लान/2000)। प्रधान अन्वेषक- डॉ. संदीप शर्मा।

स्थिति : आदर्श वन पौधशाला, बारगांव, शिमला में एक नयी कम्पोस्ट इकाई अभिकल्पित करके चालू की गई। विभिन्न शीतोष्ण प्रजातियों की पत्तियों/सूचिकाओं से उत्पादित कम्पोस्ट में विद्यमान पोषकों की मात्रा में काफी विभिन्नता पाई गई।

परियोजना 7 : शंकु वृक्षों एवं इनके पृथुपर्णी सहयोगियों के पान्त्रीकृत पौधों को उगाने की पौधशाला तकनीकों का मानकीकरण (एच एफ आर आई-016/05 (एस एफ जी-06)/प्लान/2000)। प्रधान अन्वेषक - डॉ. संदीप कुमार।

स्थिति : विभिन्न क्षमता के स्टैण्डों के साथ जड़ ट्रेनर प्राप्त किए गए और जड़ ट्रेनरों में देवदार, फर और स्प्रूस के गुणवत्ता पौधों के उत्पादन को मानकीकृत करने के लिए परीक्षण शुरू किए गए। हिमालयन शंकु वृक्षों के क्लोनीय प्रवर्धन के मानकीकरण के लिए भी परीक्षण शुरू किए गए।

परियोजना 8 : महत्वपूर्ण वृक्ष प्रजातियों, उदाहरण - सीड्रस देवदारा, पाइनस रॉक्सबर्घाई, डैल्बर्जिया सिस्सू और पाप्युलस प्रजातियों, के नाशिकीअ और रोग प्रतिरोधी समरूपी/उद्गमस्थलों की जांच और चयन (एच एफ आर आई-013/06 (एफ पी टी-02)/2000-2005)। प्रधान अन्वेषक- रंजीत सिंह।

स्थिति : नाशिकीट प्रभाव एवं नाशीजीव प्रतिरोध हेतु इनकी जांच के लिए चयनित वृक्ष प्रजातियों के उद्गमस्थल और क्लोनों का सर्वेक्षण किया जा रहा है। शिली में 19 बीज स्रोत से देवदार के पौधों का भी सर्वेक्षण किया गया।

परियोजना 9 : सीड्रस देवदारा के विशेष सन्दर्भ में एकीकृत नाशीजीव प्रबन्ध के लिए मॉडल का विकास (एच एफ आर आई-017/06 (एफ पी टी-03)/2002-2005)। प्रधान अन्वेषक- श्री रंजीत सिंह।

स्थिति : सीड्रस देवदारा के एक मुख्य नाशिकीट इक्ट्रोपिस देवदारा की जैव-पारिस्थितिकी पूरी की गई। नाशी जीव के अण्डे, लार्वल एवं प्यूपल अवस्थाओं से निकले परजीवियों को पहचान के लिए वन अनुसंधान संस्थान, देहरादून भेजा गया। क्षेत्र में डिंभकी एवं प्यूपीय अवस्थाओं की भारी मर्त्यता देखी गयी तथा शामिल कीट रोगजनक की पहचान की जा रही है।

परियोजना 10 : देवदार पर फाइटोफथोरा सिन्नेमोमि रेन्ड्स की वृद्धि एवं रोगजनकता पर अध्ययन और इसके नियंत्रण उपायों का मानकीकरण (एच एफ आर आई-008/06 (एफ पी टी-01)/1998-2002)। प्रधान अन्वेषक- श्री चरन सिंह।

स्थिति : नियंत्रित अवस्थाओं के अन्तर्गत ट्राइकोडर्मा विरिडी के साथ फाइटोफथेरा सिन्नेमोमि के जैविकीय नियंत्रण को मानकीकृत किया गया।

परियोजना 11 : हिमाचल प्रदेश की निचली पहाड़ियों में देशज प्रजातियों के विभिन्न संयोजनों का उपयोग करके उपयुक्त क्षेत्र रोपण मॉडलों का, इनकी अर्थव्यवस्थाओं के मूल्यांकन सहित, विकास करना (एच एफ आर आई-014/08 (ए एफ-01)/प्लान/2000)। प्रधान अन्वेषक- डॉ. आर.के. वर्मा।

स्थिति : अभिकल्पित प्रश्नावली में सामाजिक-आर्थिक सर्वेक्षण किया गया। किसानों की पसन्द की देशज प्रजातियों की सूची संकलित की गई और तदनुसार उपयुक्त कृषि वानिकी मॉडलों के विकास के लिए पौधशाला तैयार की गई।

वर्ष 2001-2002 के दौरान शुरू की गई नई परियोजनाएं

कोई नहीं

संस्थान के अधिकार क्षेत्र के अन्तर्गत अनुसंधान उपलब्धियां राज्यवा :

राज्य का नाम	2001-2002 में पूरी की गई परियोजनाओं की संख्या	2001-2002 में पूरी की गई परियोजनाओं की संख्या	2001-2002 में शुरू की गई परियोजनाओं की संख्या
हिमाचल प्रदेश	7 उप परियोजनाओं एवं 12 घटकों के साथ 3 मुख्य परियोजनाएं	11	कोई नहीं
जम्मू व कश्मीर	3 उप-परियोजनाओं एवं 4 घटकों के साथ 2 मुख्य परियोजनाएं	02	कोई नहीं

सहानुबंध एवं सहयोग

हिमाचल प्रदेश और जम्मू व कश्मीर के राज्य वन विभाग के साथ अनुसंधान एवं प्रशिक्षण के क्षेत्र में सहानुबंध स्थापित किए गए। संस्थान उपर्युक्त दो राज्यों के राज्य वन विभागों द्वारा उगाए गए चीड़ पाइन, शीशम और विलों में मर्त्यता से संबंधित मामलों का विशेषकर समाधान करता है। इसके अलावा, संस्थान ने समन्वयक, विश्व वन्यप्राणि निधि, शिमला के साथ भी सहयोग विकसित किया है, जिसके द्वारा व्याख्यान और क्षेत्र भ्रमण आयोजित किए गए। इन प्रशिक्षणों के माध्यम से विभिन्न स्कूलों के करीब 335 बच्चों को पर्यावरण के प्रति जागरूक बनाया गया।

प्रकाशन

पुस्तकें

सुरेन्द्र कुमार,; के.एस. कपूर, वनीत जिस्तू और एस.पी. सुब्रमणी (2001)। हिडन ट्रेजर्स ऑफ कोल्ड डीजर्ट इन नार्थ वेस्ट हिमालयाज़ (थ्रीटेन्ड मेडिसिनल प्लांट्स)।

रिपोर्टाधीन अवधि के दौरान संस्थान का ब्राशुअर्स प्रकाशित किया गया।

नर्सरी मैनुअल ऑन एग्रो-टैक्नोलॉजी ऑफ सिल्वर फर एण्ड स्प्रूस प्रकाशित।

शोध लेख

1. बहार, एन.; के.एस. कपूर और ए.के. जैन (2001)। लिटर प्रोडक्शन पैटर्न ऑफ यूकेलिप्टस टेरैटिकॉर्निस प्लांटेशन्स इन प्रोटेक्टेड एण्ड अनप्रोटेक्टेड एरियाज ऑफ अपर जाइगेन्टिक प्लेन्स; इंडियन फॉरेस्टर, वाल्यूम 127 (7) : 814-820।
2. रंजीत सिंह, (2000)। डाइवर्सिटी ऑफ इन्सेक्ट्स इन इंडियन फॉरेस्ट्स एण्ड इट्स यूज इन पेस्ट मैनेजमेन्ट। राम प्रकाश द्वारा सम्पादित; एडवान्सेज इन फॉरेस्ट्री रिसर्च इन इंडिया, वाल्यूम नं० XXIII, आई एस एस एन : 0971-2704 : 204-224।
3. रंजीत सिंह, (2001)। मैनेजमेंट ऑफ चीड़ पाइन ट्रीज़ इन मोरनी हिल्सी, हरियाणा। इन रीसेन्ट ट्रेन्ड्स इन इन्सेक्ट पेस्ट कन्ट्रोल टू इनहैन्स फारेस्ट प्रोडक्टिविटी, सम्पादित-शुक्ला पी.के., और जोशी के.सी.; 67 आई सी एफ आर ई बी के-55 : 212-217।
4. रंजीत सिंह,; के.के. शशिधरन,; ए.एम. सलारखान और आर. महालक्ष्मी (2001)। बेटोसीरा रूफोमेकूलाटा (कॉलीओप्टेरा : सीरेम्बीसिडा), ए न्यू इन्सेक्ट रिकार्ड ऑन कैज्वारिना इक्विसिटिफोलिया एल. इन इंडिया। इंडियन फारेस्टर, वाल्यूम 127 (6) : 723।
5. रंजी सिंह,; जी.एस. गोराया, चरन सिंह, शैलेन्द्र कुमार और सुरेन्द्र कुमार (2001)। मॉर्टेलिरी ऑफ चीड़ पाइन बाई इन्सेक्ट बोरर्स इन मोरनी हिल्स, हरियाणा-ए केश स्टडी। इंडियन फारेस्टर, वाल्यूम 127 (11) : 1279-1286।
6. चरन सिंह, और शैलेन्द्र कुमार (2001)। टॉक्सिसिटी ऑफ इन्सेक्टसाइड्स ऑन कट वार्म; एग्रोटिस ईप्सिलॉन हफनागल (लेपिडोप्टेरा : नाक्टिडा), ए. पेस्ट ऑफ पावलोनिया फार्चूनी इन पांवटा वैली। इंडियन जॅरन. फारेस्ट्री, वाल्यूम 24 (1) : 29-31।

परामर्शी सेवा

हिमाचल प्रदेश में एम पी सी ए की स्थापना के लिए हिमाचल प्रदेश के राज्य वन विभाग को परामर्शी सेवाएं उपलब्ध कराई गयीं।

सम्मेलन, बैठकों, कार्यशालाओं, संगोष्ठी, प्रदर्शनियों का आयोजन एवं सहभागिता

हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान ने वर्ष 2001-2002 के दौरान निम्न प्रशिक्षण एवं कार्यशालाओं तथा बैठकों का आयोजन किया :

- वन कीट विज्ञान एवं जैविकीय नियंत्रण पर एक सी टी ए कार्यशाला एवं पुनरीक्षण
- राज्य वन निगम के अधिकारियों के लिए बांस पर प्रशिक्षण।

- हिमाचल प्रदेश के राज्य वन विभाग और वन अनुसंधान संस्थान, देहरादून के सहयोग से सुन्दर नगर में किसान मेला आयोजित किया गया।
- संस्थान के कर्मचारियों को कम्प्यूटर सिद्धान्त एवं ऑरेकल-8i में प्रशिक्षण दिया गया।
- रिपोर्टाधीन अवधि के दौरान अनुसंधान सलाहकार समूह बैठक आयोजित की गई।
- वानिकी से संबंधित विषयों पर सम्पर्क बैठक का आयोजन किया गया, जिसमें हिमाचल प्रदेश और जम्मू व कश्मीर के राज्यों से वन अधिकारियों, वैज्ञानिकों, गैर सरकारी संगठनों, उद्योगों और किसानों ने भाग लिया।
- वन कीट विज्ञान एवं जैविकीय नियंत्रण पर कार्यशाला एवं पुनरीक्षण का आयोजन किया।

प्रतिष्ठित आगन्तुक

वर्ष 2001-2002 के दौरान विभिन्न अवसरों पर निम्न प्रतिष्ठित व्यक्तियों ने संस्थान का भ्रमण किया :

- श्री आर.ए. सिंह, भा.व.से., प्रधान मुख्य वन संरक्षक, हिमाचल प्रदेश।
- डॉ. पंकज खुल्लर, भा.व.से., प्रधान मुख्य वन संरक्षक (वन्यप्राणि), हिमाचल प्रदेश।
- श्री पी.सी. कपूर, निदेशक, राज्य वन अनुसंधान संस्थान, जम्मू व कश्मीर।
- प्रोफेसर के.ए. रिजवी, ए एम यू, अलीगढ़।

विविध

प्रोफेसर टी.डी. वर्मा, औद्यानिकी एवं वानिकी विश्वविद्यालय, नॉनी (सोलन) ने हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला में "एकीकृत नाशीजीव प्रबंध-वानिकी में नाशीजीव प्रबंध में एक असाधारण एप्रोच"; विषय पर व्याख्यान दिया। इसमें हिमाचल प्रदेश के राज्य वन विभाग के वरिष्ठ अधिकारियों ने भी भाग लिया।

